International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 02(I), April - June, 2021, pp.158-160

संगीत के प्रचार प्रसार में इलेक्टानिक एवं सोशल मीडिया की भूमिका

डॉ. अनामिका दीक्षित*

प्रस्तावना

बीसवीं शताब्दी को परिवर्तन का युग कहा गया है इस शताब्दी में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बडी ही तीव्रता से परिवर्तन हुयेहै स्वतन्त्रता के कारण राजनैतिक सामाजिक सांस्कृतिक शैक्षिक गतिविधियों में भी परिवर्तन हुये है परन्तु वैज्ञानिक परिवर्तनों को इस सदी की महान उपलब्धि कहा जायेगा,वैज्ञानिकता ने जैसे ही मनुष्य जीवन के सभी सामान्य पक्षों को प्रभावित किया है वही भारतीय संस्कृति कला एवं संगीत पर भी बहुतायत से प्रभाव पडा है संगीत के क्षेत्र में संचार माध्यमों का प्रभाव पडने के कारण इसके प्रचार प्रसार के साधन सुलभ हो गये जिसके कारण संगीत कला की शिक्षा प्रदर्शन और सभी चीजों में परिवर्तन हुआ और संगीत घरानों के सीमित दायरे से निकलकर जनसाधारण तक सुगमतापूर्वक पहुँच सकी भारत में ब्रिटिश सत्ता के स्थापित हो जाने पर हिन्दुस्तानी संगीत को देशी रजवाडों में आश्रय प्राप्त था अर्थात कलायें केवल किलों में कैद होकर रह गई संगीत शिक्षा जनसाधारण तक सुगमतापूर्वक पहुँच सके इसलिये बुद्विजीवी वर्ग के लोगों ने इसे समृध करने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध से प्रारम्भ होकर बीसवी शताब्दी के पूर्वाद्ध तक का समय सामूहिक शिक्षण संस्थाओं की नींव मजबूत करनेसमाज के अन्तर्गत संगीत शिक्षा के प्रति जागृत होने संगीत की प्रतिष्ठा बढाने संगीत कलाकारों को उचित सम्मान प्राप्त कराने हेतु योग्य सिद्ध हुआ,वर्तमान काल में जिस प्रकार संगीत सर्व जनों को सुलभ हुआ है उसका मूल कारण संचार माध्यमों की भूमिका रही है हर समुदाय जाति और वर्ग के लोगों तक संगीत को जानने एवं समझने का अवसर प्राप्त हुआ है।प्रचार प्रसार के माध्यमों में इलेक्ट्रानिक उपकरण के साथ पुस्तकों के प्रकाशन ने भी संगीत जगत में एक क्रान्ति पैदा की अभी तक केवल गुरू मुख द्वाराही यह विद्या प्रदान की जाती रही।इसके पहले संगीत में कोई स्वरलिपि प्रचलित नही थी मौलाबक्श घिस्से खां ने स्टाफ नोटेशन परिचय के पश्चात हिन्दुस्तानी संगीत में भी स्वर लेखन के कार्य को कार्यान्वित किया तथा संगीत को लेखनी बद्ध करके पुस्तक में बांधने कार्य भी किया1प्रचार प्रसार के माध्यमों में तकनीकी उपकरणों के साथ पुस्तकों की छपाई प्रिंटिग प्रेस की सुविधा से संगीत जगत में एक नई दिशा को जन्म दिया जिससे संगीत जनमानस तक सुगमतापूर्वक पहुच पाया। क्योंकि कालान्तर में संगीत शस्त्र का ज्ञान केवल पाण्डुलिपियों कें माध्यम से प्राप्त होता रहा है इस ज्ञान को प्रकाशन की सुविधा प्राप्त होते ही विविध संगीत ग्रन्थों का पुस्तको का पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशनहुआ जिससे संगीत जगत में नई क्रान्ति पैदा हुई प्रिंट मीडिया के द्वारा ही किसी कार्यक्रम की सफल मंच प्रस्तुतीकरण का संयोजन किया जाता है कि कार्यक्रम में कलाकार ने क्या गाया क्या बजाया आप उस कार्यक्रम में उपस्थित रहे या न रहे उस कार्यक्रम की सारी रूपरेखा रिर्पोटिंग द्वारा आपके सम्मुख होती है

20वीं शताब्दी के पूर्वाद्व में कई आविष्कार हुये परन्तु संगीत के प्रचार प्रसार उसके संरक्षण एवं उसे सुरक्षित रखने के लिये जिन उपकरणों या वाद्ययंत्रों का प्रयोग हुआ वो इसी सदी की देन है।ग्रामोफोन के कारण उस समय के गायक कलाकारों की क्या गायन शैली या विशेषतायें रही या आज गायन में कितना कुछ अन्तर हो गया है इन सबका ज्ञान हमें प्राप्त होता हैये इन्ही उपकरणों की ऐसी देन है जिससे कलाकार की कला को वर्षो

* एसोसिएट प्रोफेसर वाद्य संगीत, आर्य महिला पी.जी. कॉलेज चेतगंज वाराणसी, उत्तर प्रदेश।

तक सुरक्षित रखना सम्भव हो सका इसके पश्चात एक ओर इलेक्ट्रानिक कृति सामने आयी जिसने भारतीय शास्त्रीय संगीत जगत में ही नही वरन पूरे विश्व में क्रान्ति कर ली वो था रेडियो का आगमन जिसके कारण संम्पूर्ण विश्व की सूचना ज्ञान विज्ञान कला संगीत को जनमानस तक सरलता से उपलब्ध कराया गया रेडियो का उद्देश्य जनता के मनोरंजन और उन्हें शिक्षित करने के लिये अच्छे कार्यक्रमों का प्रसारण करनाएवं शास्त्रीय संगीत को जन–जन तक पहुँचानें में एक सशक्त माध्यम साबित हुआ एक चमत्कार सा ही लगने लगा कि कोई कलाकार मुम्बई में गा बजा रहा है और उसे दिल्ली या अनयत्र कही सुंना जा रहा है 2उस समय शास्त्रीय संगीत के ये कार्यक्रम सजीव प्रसारित होते थे संचार माध्यमो में ये उस समय की बहुत बडी क्रान्ति थी। रेड़ियो के पश्चात टेलीविजन का विकास तो स्वाभाविक ही था परन्तु चित्रपट का आविष्कार किसी चमत्कार से कम न था क्योकि ध्वनि के साथ चित्र भी प्रेषित होने के कारण मानव मन की संवेदना एवं व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया गया जिसके माध्यम से दर्शकों पर इसका सीधा प्रभाव दृष्टिगोचर हुआइस समय जहां इलेक्ट्रानिक उपकरण के आविष्कार से मानव जीवन का प्रत्येक क्षेत्र प्रभावित हो रहा था वही ग्रामोफोन रिकार्डस आकाशवाणी जैसे चमत्कारों से संगीत कला का प्रभावित होना स्वाभाविक था इन उपकरणों के माध्यम से संगीत को सुनने एवं उसको सुरक्षित रखने के प्रयास किये जा रहे थे किन्तु इन उपकरणों का प्रयोग उस समय तक गायक वादक अभ्यास पद्वति में एवं मंच प्रदर्शन के कार्यक्रमों में नही करते थे परन्तु कहीं – कहीं ध्वनि विस्तारक यंत्र माइक माइक्रोफोन का प्रयोग बड़ी बड़ी महफिलों क्रान्फ्रेन्सों के लिये किया जाने लगा कालान्तर में गायन के कार्यक्रम मंच पर ज्यादा प्रदर्शित होते थे उनकी अपेक्षा में वादक अपना कार्यक्रम मंच पर उतने अधिक प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर पाने में सक्षम नही थे क्योकि इन वाद्यों का स्वर अपेक्षा कृत धीमा होता है और उसे दूर तक सुना नही जा सकता अगर इन ,ध्वनि विस्तारक,इलेक्ट्रानिक उपकरणों का आविष्कार न किया गया होता तो शायद इन तार वाद्यों को कार्यक्रम में महत्व नही मिल पाता किन्तु माइक्रोफोन के कारण तत और सुषिर वाद्यों का प्रभाव एकदम बढ़ गया और ये वाद्य मंच पर बहुतायत से प्रयोग होने लगे ध्वनि विस्तारक यंत्र इनके लिये वरदान साबित हुये। वर्तमान काल में अति सूक्ष्म माइक्रोफोन वाद्यों में लगाकर कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते है जिसके माध्यम से वाद्यों के ध्वन्यात्मक सौन्दर्य में पहले की अपेक्षा अधिक वृद्धि हुई हैं ध्वनि विस्तारक यंत्रों में माइक्रोफोन आडियो एम्पलीफायर ट्रांजिस्टर एम्पलीफायर के रूप में बहुत विकसित हुआ अब उसका प्रचार प्रत्येक संगीत सभा में बहुतायत से होने लगा3 वैज्ञानिक आविष्कारो ने कुछ अन्य उपकरणो को प्रयोग में लाया जिनका उपयोग सांगितिक गतिविधियों में ही प्रयोग हुआ ये उपकरण संगत तथा रियाज के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुये है इनमें विद्युतीय तानपुरा तालमाला स्वरपेटी लहरा मशीन इत्यादि वाद्यो का विशेष स्थान है, इसके अतिरिक्त सिंथेसाइजर का प्रयोग पाश्चात्य संगीत में होता था परन्तु हिन्दुस्तानी संगीत में भी इसका प्रयोग हो रहा है वर्तमान में नये सिंथेसाइजर डिजिटल टेक्नोलाजी से बन रहे है इसमे हर प्रकार के वाद्यों की आवाज पैदा की जा सकती है तथा ये कई वाद्यों की मिली जुली ध्वनि उत्पन्न करने में सक्षम है जिसकी कल्पना करना भी कठिन है भारतीयसंस्कृति की मूल धरोहर संगीत की विधायें संचार माध्यमों के द्वारा प्रतिष्ठित एवं पल्लवित हो रही है,वर्तमान के प्रचार–प्रसार के समय में रेडियो सी0 डी0 डी वी डी प्लेयर, टेलीविजन, वी सी पी,कम्प्यूटर, पैनडाइव, इण्टरनेट, मोबाइल फोन ने भारतीय संगीत को अपना बहुमूल्य योगदान दिया है सोशल मीडिया वह माध्यम है जो विश्व के कोने कोने में पहुचकर सबको जोडने का काम करता है एवं अति द्रुत गति से समाचारो का आदान प्रदान कर सकारात्मक भूमिका अदा करता है यह एक ऐसा वर्चुअल वर्ल्ड बनाता है जो फेसबुक ट्विटर इंस्टाग्राम यु ट्युब गूगल इत्यादि की सहायता से विश्व के किसी भी विषय की किसी भी कोने में बैठकर जानकारी प्राप्त करा सकता है पहले शिक्षा के सभी विषयों साहित्य विज्ञान मनोविज्ञान चिकित्सा इत्यादि में सोशल मीडिया की भूमिका रही परन्तु अब संगीत कला में भी सोशल मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण है व्यक्ति इण्टरनेट के माध्यम से संगीत सीखता और सिखाता है, ये इलेक्ट्रानिक उपकरण और सोशल मीडिया की ही प्रगति है जिसने हमारे भारतीय शास्त्रीय संगीत को बहुत कुछ वरदान दिया हैं टेलीविजन के विभिन्न सेटेलाइट चैनलो के माध्यमों से संगीत को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण निभाई जा रही है कम्प्यूटर के द्वारा नित नये सॉफ्टवेयर का निर्माण करके संगीत निर्देशन के क्षेत्र में क्रांति की लहर दौड पडी पहले की तुलना में आज ध्वनि की गुणवत्ता में भी आश्चर्य जनक परिवर्तन हो गये है।

जाने माने सरोद वादक उस्ताद अमजद अली खां जी के शब्दों में सोशल मीडिया भारत में शास्त्रीय संगीत को उनका स्थान दिलााने में मदद कर रहा है शास्त्रीय संगीतज्ञ अब मुख्य धारा में आ गये है और यह कला एवं संगीत के प्रति लोगो के प्रेम की वजह से संभव हुआ।4

परन्तु कोरोना काल ने शास्त्रीय संगीत की सभी गतिविधियों पर प्रभाव डाला है सभी मंच कलाओ को सोशल मीडिया के माध्यम से फेसबुक लाइव, यू ट्यूब, व्हाट्सप, विडियो कालिंग, रिकार्डिंग इत्यादि के माध्यम प्रस्तुत किया जा रहा है मानों सोशल मीडिया के माध्यम से संगीत में सुनामी आ गई हो प्रतिदिन फेसबुक पेज के माध्यम से कार्यक्रमों का प्रसारण हो रहा है।

जिसके द्वारा संगीत के विशेष आयोजन सर्वसाधारण के लिये सुलभ हो गये है इसका आनन्द संसार के किसी भी कोने में बैठा व्यक्ति सरलता से उठा रहा है। किसी भी विषय वस्तु के दो पहलु होते है पहला सकारात्मक और दूसरा नकारात्मक आज हम सभी इन्ही सोशल मीडिया के माध्यम से पठन पाठन, कॉन्फ्रेन्स, वेबीनार इत्यादि कर रहे है पर संगीत प्रदर्शन की कला हैसोशल मीडिया के माध्यम से कलाकारो ने अपनी कला को जीवंत तो रखा परन्तु उन कलाकारो के जीवन में निराशा सामनें आयी जिनकी आजिविका ही इसके माध्यम से चलती थी संगतकारों लोक कलाकारों का जीवन तो जैसे शून्य की तरफ चला गया हो ये नकारात्मकता सोशल मीडिया के माध्यम से हुये इलैक्ट्रानिक उपकरणों के आधार पर किये गये कायक्रमों के माध्यम से उत्पन्न हुई है क्योंकि इलैक्ट्रानिक उपकरण का प्रयोग संगतकारो के अभाव में केवल अभ्यास या रियाज के लिये किया जाता रहा है पर वर्तमान काल में कलाकारों ने अपनी कला के प्रदर्शन हेतु इन इलेक्ट्रानिक उपकरणों का सहारा लिया परन्तु किसी भी कलाकार के लिये यूं इलेक्ट्रानिक उपकरणों खासकर तबला एवं लहरा मशीन द्वारा सजीव कार्यक्रम का प्रसारण करना दुरूह कार्य रहा क्योकि कलाकार एवं संगतकार का आपसी तालमेल होने से प्रदर्शन में बाधा उत्पन्न नही होती है और कार्यक्रम अबाध गति से चलता है पर इन उपकरणों को प्रदर्शन के दौरान प्रयोग करने पर बार बार उसकी गति आवाज टोनल क्वालिटी को देखने से उस कार्यक्रम की जीवंतता कायम नही हो पाती लेकिन इतने अभाव में भी इस काल के अन्तर्गत अनगिनत कार्यक्रम सुचारू रूप से प्रदर्शित किये गये ये केवल और केवल सोशल मीडिया के द्वारा ही सम्पन्न हो सकाइन सभी सार्थक परिणामों के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व में भारतीय संगीत का परचम लहरा रहा है और देशी रसिको के साथ ही विदेशी श्रोताओं को भी भारतीय संगीत का रस इन सोशल मीडिया के माध्यमों से प्राप्त हो रहा है। इससे यह कहा जा सकता है कि भारतीय शास्त्रीय संगीत के उत्थान एवं प्रचार प्रसार में इलेक्ट्रानिक उपकरण एवं सोशल मीडिया का महत्वपूर्ण योगदान है।

सन्दर्भग्रन्थसूची

1. भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग.....डॉ0 अनीता गौतम।
2. भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग.....डॉ0 अनीता गौतम
3. भारतीय संगीत को मीडिया और संस्थानों का योगदान..... डॉ0 राधिका शर्मा
4. संजय श्रीवास्तव ..... सोशल मीडिया द्वारा प्राप्त
5. भारतीय संगीत का इतिहास.....श्रीधर शरतचंद्र परांजपे

❖◆❖